om-10_Page 1 and 2 18-08-2014 10:04 Page 10

सबके मन के मर्ज का इलाज दादी के पास था

ब.कु.डॉ.सविता,मधुबन।

दादी क्लास से आती थी तो उन्हें लाने की सेवा पहले एक बहन करती थी, बाद में मुन्नी बहनजी ने मुझे ये सेवा करने का भाग्य दिया। क्लास के बाद नाश्ते तक उनके साथ रहने से दादी के बारे में काफी कुछ जानने को मिला। दादी क्लास के बाद सीधे नाश्ते पर न जाकर सभी डिपार्टमेंट्स में जाकर देखती थीं और वहाँ का हालचाल लेती थीं। कारोबार से जुड़े कई कार्य दादी नाश्ते से पहले ही कर लेती थीं। दादी से कोई भी कभी भी आसानी से जाकर मिल सकता था और अपनी समस्याओं को उनके सामने रख सकता था। दादी को उस समय खांसी बहुत हुआ करती थी, इस कारण डॉ. होने के नाते रात को मेरी सेवा उनके पास रहती थी। मैं देखती थी कि दादी जब बेड पर आती थीं, तो मुरली पढ़े बिना कभी भी नहीं सोती थीं, चाहे कितनी भी देर हुई हो लेकिन मुरली बिना पढ़े दादी कभी सोई नहीं। अमृतवेला भी दादी ने कभी मिस नहीं किया भले कितनी ही देर रात को सोई हों। एक बार मैंने दादी से यूं ही पूछ लिया कि दादी यहां सब अलग से स्पेशल बैठ कर योग करते हैं, आप अमृतवेला तो करते हैं लेकिन अलग से योग में क्यों नहीं बैठते, फिर आप कब याद करते हैं? तो दादी ने मुझे जवाब दिया कि मैंने बाबा को भूला ही कब है जो मुझे याद करना पड़े। ये बात मेरे दिल को छू गई थी। मैं कई बार रात भर दादी के साथ रही हूँ, उनके साथ सोई भी हूँ, तो मैंने देखा है कि दादी बेड पर जाकर मुरली पढ़ती थीं और एक मिनट में सो जाती थीं। कैसा भी समय हो, परिस्थिति हो लेकिन उनकी स्थिति पर असर आए ऐसा कभी नहीं हुआ। दादी एक बार राजस्थान के इंजीनियर्स ग्रुप से मिल रही थीं तो उन्होंने कहा कि राजस्थान में पानी की कितनी कमी है तो क्यों नहीं आप नदियों को जोड़ देते हैं, जो बात अब चल रही है। दादी जब पत्रकारों से मिलती थीं तो कहती थीं कि जैसे आप कलम चलाते हो कमल फूल समान बनकर कलम चलाओ, तो उनको भी ये बातें महसूस होती थीं।

दादी अपने अंतिम दिनों में बीमार और दर्द में होने के बावजूद भी कभी उनके चेहरे पर दर्द के भाव नहीं आए, बल्कि वे तो हमें ही सहयोग देती थीं। ऐसी ही न्यारी-प्यारी स्थिति में हमने दादी को देखा। उस स्थिति में भी दादी मुरली मिस नहीं करती थीं। खुद भले नहीं पढ़ पाती थी तो कहती थी कि मुझे मुरली सुनाओ। बीमार होने के बावजूद भी सभी को उनका भरपूर प्यार व मिलती रही।

कमी को दूर कर कमाई करना सिखाया दादीने

-ब.कु.कुलदीप बहन, हैदराबाद

कमी को दूर कर कमाई करना सिखाया दादीने दादी ने मुझे बचपन से ही भाग्यशाली होने का वरदान दिया था, वे कहती थीं कि बाबा ने तुम्हें कितना ऊंचा भाग्य दिया है! मुझे बचपन से ही जो भी पॉकेट मनी मिलती थी, वो मैं छुपा-छुपाकर मनीऑर्डर कर देती थी। समर्पित होने बाद मैं हैदराबाद में रहने लगी तो दादी हर साल वहाँ आया करती थीं। उन्हें वहाँ आकर सिन्ध की याद आती थी।

एक बार दिल्ली में बहुत बड़ा मेला हो रहा था, उस समय हैदराबाद में हमारी केवल एक छोटी सी गीतापाठशाला थी और मैं भी छोटी ही थी। दादी ने सभी बड़ी बहनों से पूछा ए.बी.सी. तीन कैटेगरी है, ए वालों को 15 हज़ार, बी वालों को 10 हज़ार, सी वालों को 5 हज़ार, तो मैंने सोचा कि हमारे लिए तो सी ही ठीक है, लेकिन दादी मेरे ऊपर बहुत अधिकार रखती थीं। उन्होंने कहा कि तुमने सी कहा तो अब तुम्हें डबल ए करना पड़ेगा, तो मैंने कहा हाँ, मुझे लगता था कि दादी ने कहा माना बाबा ने कहा, अब तो जान भी देनी पड़े तो मुझे मंज़ूर है। अपने पास कुछ भी नहीं रखते थे। इसलिए दादी मुझे बहुत वरदान देती थीं कि जैसे तुम्हारे पिता का सच्चा दिल है, तुम्हारी माँ का है, ऐसे ही तुम्हारा भी है। फिर मैंने अपने लौकिक पिता को कहा तो उन्होंने उस जिम्मेवारी को पूरा किया।

जब ज्ञानसरोवर बनने वाला था, उस समय मैं किसी तकलीफ के कारण खड़ी होकर चल नहीं सकती थी, पर मैं दादीजी को कैसे कहूँ। मेरा हाथ पकड़कर दादी हर स्थान दिखाती थीं। उस समय दादी ने सभी बड़ी बहनों से पूछा था कि कौन-कौन बैंक का 50 प्रतिशत खाली करके दे सकते हैं? उसके बाद मैं दादी के कमरे में गई और कहा कि आप कहो तो मैं 100 प्रतिशत भी दे दूँ। तो दादी ने कहा कि नहीं अपने लिए भी रखो, इतना देने की ज़रूरत नहीं है तो भी मैंने अपने बैंक का 99 प्रतिशत निकाल कर दादी को दे दिया। दादी ने मुझे कहा कि ये तो तुमने कमाल ही कर दिया। आज भी मुझे लगता है कि दादी के वरदानों से ही हैदराबाद में सेवा का इतना विस्तार हुआ है। मुझे ऐसा लगता है कि दादीजी आज भी मेरे साथ हैं, मुस्कराते हुए हमेशा मेरे सर पर हाथ रखती हैं। मैं दादी के साथ बिताए दिन कभी नहीं भूल सकती। मुझे बहुत प्यार भरी पालना दादी से मिली है, वो सारे पल मेरे लिए अविस्मरणीय है। उनकी निर्माणता, उनकी सरलता, उनकी मधुरता, उनका करुणामयी स्वभाव मेरे जीवन में समाया हुआ है, मैं उसे कभी भूल नहीं सकती।

मेरी मीठी प्यारी दादी जी ,

आप जहां कही भी हो, हम जानते हैं कि आप हमें देख रहे हो और सुन रहे हो। आज आपके सातवें स्मृति दिवस के अवसर पर अपने दिल की आवाज़ को अक्षरों के साज़ पहनाकर इस खत के माध्यम से आप तक पहुँचाना चाहती हूँ। दादी जी हमने जब मधुबन में कदम रखा और आपको देखा तो एक मिनट की दृष्टि और मुलाकात ने हमारे लौकिक के सारे बंधनो को सेकेण्ड में तोड़ दिया। आपमें वो करिश्माई जादू था जो उस दिन के बाद एक बार भी लौकिक याद नहीं आयी, मोह का रग ऐसा टूटा कि आप और सिर्फ ही मेरे जीवन में रह गए।

आपके संग रहकर हमनें बहुत सारी बाते सिखीं तथा उस शक्ति का अहसास आज भी कर रहे हैं। हमें ऐसा लगा जैसे ब्रह्मा बाबा मधुबन के कण-कण में हैं, वैसे ही आप मधुबन निवासियों के दिलों में गुनगुनाती रहती हैं।

आप कहते थे ना कि सम्मान, प्यार और खुशी देने से मिलता है, तो हमने अपने जीवन में उसका भी अनुभव किया। आपका कहना कि ब्राह्मणों का जीवन स्वतः एक अनुशासन है, मैं इसका भी अनुभव करती हूँ। आप जैसे ही क्लास में मुरली पढते, वो मुरली सबके दिल तक सीधे पहुँचती। मैं सोचती कि दादी की मुरली में ऐसा क्या है कि जो सबके दिलो-दिमाग पर छा जाती। तब मुझे पता चला कि आप इसके पहले तीन बार मुरली का सेवन कर चुके होते। तभी तो हरेक भाई-बहन उसे दिल से अपना लेते और कहते कि मुझे अपनी दादी माँ जैसा बनना है।

दादी आपकी वाणी व दृष्टि में एक ऐसा आकर्षण था कि जो भी आपसे एक बार मिलता उस मुलाकात को वो संजो कर रखता और बार-बार दिल के शोकेश को खोलकर उस एहसास को पुनःश्च अनुभव करता। मुझे याद है कि जब हम मुम्बई से मधुबन में रहने आये, उस समय माउण्ट आबू की ठण्डी सहन नही होती थी तो आप ने मुझे खुद बुलाकर गरम कपड़े पहनाएं। एक मां की तरह हर मधुबन निवासी को आपसे प्यार वा दुलार मिलता रहा तो वह एक बाप की तरह आपने हरेक सुविधा और आवश्यकता का ध्यान रखा। आप अनुभव और निर्णय की इतनी बड़ी ऑथोरिटी होते हुए भी हर बात में मधुबन निवासियों की राय जरूर लेती थीं। आप कहती थी कि मेरे मधुबन निवासी सभी राय बहादुर हैं, लेकिन समय पर सेवा में हड्डी मेहनत करने में भी पीछे नहीं हटते। आप हम मधुबन की कुमारीयों को इतना प्यार करती थी कि अगर एक दिन भी हम आप से न मिले तो दूसरे दिन आप जरूर पूछती थीं कि कल कहां थी ? हम रोज रात्रि को गुडनाइट कहने को आप के रूम में जमा होती, और आप सोने से पहले हमसे मुरली के प्वाइंट पर चर्चा करती थी। इस तरह हम न जाने कितनी ही बातें आपसे सीख जाते थे। वह बातें और वह रोज़ की मुलाकातें हम कभी नहीं भूल सकते। आज भी हमे वो समय याद है जब आप के साथ बारिश में झरना देखने जाते थे,पानी में खूब भीगना और फिर गरम-गरम पकौड़े खाना,क्लास में बैठे-बैठे पहली बारिश की खुशी में आपका उसी समय हलवा बनवाना और सबको खिलाना। हमे यह भी याद आता है कि जो मधुबन मे आते थे उनसे यह पूछना कि आप सभी की तबीयत ठीक है ? सबको रहने का स्थान ठीक मिला है ? किसी को कोई सुविधा तो नहीं चाहिए, यदि कुछ चाहिए तो बोलो। आपकी वह प्यार भरी पूछताछ हम कभी नहीं भूल पायेंगे दादी माँ।

आपने मुझे जब ज्ञानसरोवर सेवा में भेजा तो मुझे मधुबन(पाण्डव भवन) और आपकी याद में रोना आता था। उस समय ज्ञान सरोवर नया नया बना था और अकेलापन महसूस होता था। एक दिन जब आपका फोन आया तो मैं अपने आँसू रोक नहीं पाई और अश्रुपूरित नैनों से मैंने कहा कि दादी आपकी बहुत याद आती है। उस समय आप ४ दिन के लिए बेलगाम जा रही थीं। आपने जब मुझे साथ सेवा पर चलने को कहा तो मैं बहुत खुश हुई। जब आपको पता चला कि यह मेरी पहली हवाई यात्रा है तो आपने मेरे साथ बैठकर हवाई जहाज की एक एक चीज़ दिखा कर परिचय करवाया।

मैने सोचा था कि मैं दादी जी के साथ जा रही हूँ और उनकी सेवा करूंगी ,लेकिन मुझे सेवा का मौका तो नही मिला उल्टा आप ने ही हर कदम पर मेरा ध्यान रखा दादीजी आपको साकार रूप से हमारे बीच से गये हुए सात वर्ष ही हुंए है। लेकिन मधुबन का एक दिन भी ऐसा नही है जो आप याद न आये हो । यह मेरा अकेले का अनुभव नहीं है लेकिन यह हरेक ब्राह्मण, हरेक ब्रह्माकुमारी टीचर के दिल की आवाज है।

हमें याद आता है कि बच्चों के प्रोग्राम में रात्रि ग्यारह बजे भी बच्चों की ज़िद्द पर उनसे मिलना और उन्हें टोली खिलाना तथा आपकी पावरफुल क्लासेज़ भी हमें बहुत याद आती हैं। कुमार तथा कुमारीयों को शक्तिशाली ज्ञान और धारणा की खुराक खिलाने वाली दादी माँ के बारे में अगर मैं लिखने लगूँ तो एक भागवत की रचना हो सकती है। दादी जी आप जहां भी हैं, हमारी दिल की याद स्वीकार करना।

आपकी छोटी सी लाडली ...।

--ब्र.कु. कल्पना ,माउण्ट आबू।